भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 28 अंक : 6 | 15.11.2005 मंगलवार (नवंबर - दिसंबर) | प्रति अंक : 10.00

'बड़े घर - दीवाली' शिविर...

अहोहो ! शरद्पूर्णिमा के महामंगलकारी अवसर के बाद धनतेरस, दीवाली एवं नए वर्ष पर गुणातीत स्वरूपों द्वारा दी गई आशीर्वाद रूप अनेक अद्‌भुत स्मृतियाँ प्रगट के मुक्तों की चित्तपट्टी पर अंकित होकर अंतर में एक अनोखा आनंद एवं निश्‍चिंतता जरुर प्रदान कर रही होगी... इन मंगलकारी दिनों में कोई ना कोई ऐसी अनुभूति हुई ही होगी –

जो सीधी चेतना को स्पर्श कर गई होगी

या

पूरे साल के लिए कोई चाबी-करामत दे गई होगी

और

हमने आध्यात्मिक पथ पर एक कदम आगे की ओर बढ़ाया महसूस किया होगा।

*यही तो सही अर्थ में '**दीवाली और नया वर्ष**' मनाया कहा जाए ना !*

अबकी बार परम पूज्य गुरुजी का दर्शन, सेवा, समागम करने की निराली गरज से अमदावाद-वडोदरा-मुंबई से तकरीबन 4 मुक्त 29 अक्तुबर की दोपहर तक में दिल्ली–अपने '**बड़े घर**' यानि श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर पहुँच चुके थे। इन मुक्तों की ऐसी गरज देख कर परम पूज्य गुरुजी ने **28 अक्तुबर से 6 नवंबर – लाभपंचमी** तक का '**बड़े घर - दीवाली**' शिविर का आयोजन किया था। लौकिक रीति-रिवाजों को ठुकरा कर, शगुन-अपशगुन, वहम जैसी जगत की बातों को नज़रअंदाज करके दीवाली के दिनों में अपना घर बंद करके यूं दिल्ली जो आ रहे हैं, वे अपने लिए कुछ '**भाथु**' लेकर– बैटरी चार्ज करके जाएं, यही प.पू. गुरुजी का मक़सद था।

'**भक्त की रक्षा करना प्रभु का स्वभाव है**'– प.पू. गुरुजी द्वारा कई बार दोहराई इस बात का एहसास प्रभु ने शिविर के दूसरे दिन ही करा दिया। 28 अक्तुबर यानि शिविर के पहले दिन की शाम को कुछ व्यवस्था वगैरह में हुई देरी की वजह से सभा साढ़े छः की बजाय साढ़े सात बजे शुरु हुई। सो, सभा की शुरुआत में ही परम पूज्य गुरुजी ने ख़ूब कड़े शब्दों में कहा कि –

कल शाम सभी ठीक साढ़े छः बजे शिविर में पहुँच जाना, वर्ना जुर्माना लगाऊँगा और सभा में भी बैठने नहीं दूँगा।

बाह्यदृष्टि से कोई शायद इस बात का अर्थ कुछ और निकालें या इसे इतना महत्त्वपूर्ण ना भी समझें, लेकिन भगवान अखंड रखे संत की हर एक क्षण-हर एक बात प्रभुप्रेरित ही होती है। परंतु **यह समझने के लिए हमें बौद्धिक मूल्यांकनों को संपूर्ण तिलाजंली देनी पड़ती है।** बेशक, सभा में बैठे सभी मुक्त प.पू. गुरुजी के शब्दों का मर्म बाद में समझ पाए...

29 अक्तुबर की शाम को 6ः बजे के करीब दिल्ली में पहाड़गंज, सरोजिनी नगर, गोविंदपुरी के इलाकों में सिरियल बम्ब विस्फोट हुए। परम पूज्य गुरुजी द्वारा पहले दिन ही मिले आदेश के वश अपने हरिभक्त तो सब काम छोड़ कर शिविर की सभा के लिए समय से मंदिर पहुँच गए थे। यदि शिविर नहीं होती और समय से शिविर में पहुँच जाने प.पू. गुरुजी ने इतने सख़्त शब्दों में आज्ञा न करी होती, तो अपना कोई न कोई हरिभक्त दीवाली निमित्त किसी ना किसी काम से इन इलाकों में होता ही और कोई ना कोई इस हादसे का शिकार भी बनता। दूसरी ओर पू. मल्कानी अंकल व सौ. शीला आंटी ठीक उसी दौरान सरोजनी नगर की ओर से ही शिविर में मंदिर आने निकले थे। अचानक मानो ड्राईवर में प्रभु ने प्रवेश किया। ड्राईवर बोला कि आज रींग रोड से गाड़ी ले लेता हूँ। उसने गाड़ी यूं ले ही ली थी कि परम पूज्य गुरुजी ने टी.वी. पर सुनी खबर से तुरंत प.भ. मल्कानी अंकल को मोबाईल पर कहा कि आप रींग रोड की ओर से मंदिर आना। यूं '**भक्तों के बेली भगवान**' –यह प्रतीति प्रभु ने सभी को करा दी।

'**धनतेरस**'**–3 अक्तुबर** को शिविर शाम की बजाय सुबह रखी थी। सभा के बाद प.पू. गुरुजी व 15 के करीब भक्त दोपहर का प्रसाद लेने **प.भ. राकेश चौहान** के घर गए। उनकी भावना थी कि प्रगट की निष्ठा वाले ज्यादा से ज्यादा मुक्तों के पाँव उनके घर में पड़ें। सभी भक्तों ने वहाँ प्रसाद लिया... सायं 'धनतेरस' निमित्त प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में महापूजा रखी थी। दिव्य वातावरण के बीच हमारे सच्चे धन की–'**भक्त सहित भगवान**' की **पूजा–'महापूजा**' संपन्न हुई। महापूजा के बाद **प.पू. दीदी** के वरद् करकमल से **लक्ष्मी का 'खज़ाना'** बांटा गया।

31 अक्तुबर की शाम को शिविर सभा का लाभ सभी मुक्तों ने लिया।

पहली नवंबर - दीवाली का मंगलकारी दिन सुबह से शाम तक 'अन्नकूट महाप्रसाद' की सब्जी काटने की सेवा, फूल पिरोने की सेवा, ठाकुरजी के हॉल को सुसज्जित करने की सेवा बहनों-भाभियों-भाईयों-युवकों ने मिल कर करी। सायं प.पू. गुरुजी ने सभा में रोज की भाँति 'भक्त चरितम्' पुस्तक में से प्रसंग पढ़वा कर नए वर्ष में प्रवेश करने एक नई दिशा - नई सूझ दी।

2 नवंबर अन्नकूटोत्सव - नया वर्ष... ताड़देव मंदिर फूलों की लड़ियों से भक्तों के स्वागत में सुसज्ज खड़ा था। सुबह से ही चारों ओर रौनक व ख़ुशी का नज़ारा था। जिन भाभियों ने ठाकुरजी को धराने के लिए सुबह जल्दी उठ कर व्यंजन बनाए थे, उनके घरों से वे आ रहे थे और हॉल में स्वयंसेवक कलात्मक ढंग से उन्हें रख रहे थे।

बहुत ही कम समय में सद्भावना एवं एक लगाव से जुड़ी टी.वी. सीरीयल्स की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री **नृत्य उर्वशी सौ. कां. प्राची शाह** भी अपने मंगेतर **श्री विश्वासजी पंडया** के साथ अन्नकूट उत्सव के लिए ही दिल्ली आई। संजोगवश इसी दिन श्री विश्वासजी का जन्मदिन भी था। श्री विश्वासजी से तो परम पूज्य गुरुजी की अब तक फोन पर ही बात हुई थी। पर, परम पूज्य गुरुजी ने बताया था कि –

'विश्वास को तो मुझ से बात करने पर अपनापन लगा होगा, लेकिन पहली बार ही बात करते हुए उसकी आवाज़ में मुझे भी एहसास हुआ है कि यह कोई मेरा अपना है।'

इसी बात से ही हम सभी समझ सकते हैं कि परम पूज्य गुरुजी से उनका कोई पूर्व का करीबी संबंध जरुर होगा।

करीब साढ़े दस बजे मंदिर के पीछे उद्यान में सभा की शुरुआत हुई। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे मंच की पृष्ठभूमि पर दीवाली कार्ड की लड्डू गोपालजी की बहुत बड़ी मूर्ति अंकित थी और ऊपर लिखी भजन की पंक्ति– '**जब कोई नहीं आता, ठाकुरजी आते हैं...**' सभी को खूब भावविभोर कर रही थी। सभा की शुरुआत में प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोदजी (पंजाब), प.भ. हृदय ने भजन गाए। तत्पश्चात् प.भ. राकेशभाई ने दीवाली कार्ड पर लिखा संदेश पढ़ा और प.पू. गुरुजी ने उसका मर्म समझा कर नए वर्ष में सभी को सर्व प्रकार से सुखी रहने की चाबी बता दी।

सभा के बाद प.भ. विश्वासजी के जन्मदिन का केक जो कि **प.भ. मल्कानी साहेब** खास लाए थे, उसे काटा गया...

खूब आनंद की बात है कि 9 दिसंबर को सौ. कां. प्राची एवं श्री विश्वासजी का शुभ विवाह मुंबई में होना निश्चित हुआ है। सो, इस मंगलकारी दिन पर यहाँ होने के कारण **प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि'** पर अत्यंत पवित्र एवं पारिवारिक माहौल में मंगल श्लोकों के बीच प.पू. दीदी व सभी मुक्तों की हाज़िरी में उन्होंने एक-दूजे को जयमाला पहना कर सात **'मंगलफेरे'** के रूप में प्रदक्षिणा करी ! सभी ने पुष्पों से उनका स्वागत किया। **मानो, भक्तों की हाज़िरी में प्रभु के समक्ष विवाह के पवित्र बंधन से वे यहाँ ही बंध गए !**

यहाँ का माहौल देख कर दोनों के मुँह से बार-बार निकल रहा था कि काश ! हमारे मम्मी-पापा एवं करीबी सभी इस समय यहाँ होते।

इसी दौरान प.पू. गुरुजी, संतमंडल व अन्य हरिभक्त तो ठाकुरजी के हॉल में थाल-आरती के लिए पहुँच चुके थे। खूब सद्भावना से मंदिर के साथ जुड़े **श्री मांगेराम गर्गजी** भी हर वर्ष की भाँति आरती के समय पर पहुँच ही गए थे। संतों एवं प.भ. राकेशभाई वगैरह ने भावपूर्ण हृदय से थाल गाकर ठाकुरजी को करीब ६०० व्यंजनों का भोग अर्पण किया। प.पू. गुरुजी, संतमंडल, प.भ. मल्कानी अंकल, प.भ. वालिया साहेब, श्री विश्वासजी, श्री मांगेराम गर्ग, सत्यवती कॉलोनी के श्री सिंघानियाजी और स्थानीय एवं गुजरात, मुंबई, पंजाब व अन्य प्रांतों से पधारे मुक्तों ने ठाकुरजी की आरती उतारी... नीचे पंडाल में बहनों ने टी.वी. पर यह सारा दर्शन किया।

अन्नकूट आरती संपन्न करके संतों के जाने के बाद **सौ. कां. प्राची एवं श्री विश्वासजी ने** फेरों निमित्त मानो **नवविवाहित जोड़े के रूप में** प.पू. दीदी व अन्य भगवाधारी बहनों व मुक्तों के साथ **ठाकुरजी की आरती उतारी।**

इसी बीच मंदिर के परिसर में कढ़ी, चावल एवं मिक्स सब्जी के महाप्रसाद का वितरण शुरु हो चुका था। उपस्थित सभी हरिभक्तों ने वह प्रसाद लिया। तकरीबन तीन बजे तक कई श्रद्धालु प्रसाद लेने आते ही रहे...

शाम को पाँच बजे के करीब रुके हुए हरिभक्तों ने ठाकुरजी को धराया हुआ महाभोग प्राप्त करके धन्यता का अनुभव किया। साथ ही साथ बहनों-भाभियों ने 'अन्नकूट' के बर्तन साफ करने की सेवा भी शुरु कर दी।

देर शाम को प.पू. काकाजी महाराज की पुष्पसमाधि दीयों से जगमगा उठी। सारे दिन के आनंद के अंतिम पड़ाव– यानि गरबे आदि के लिए बहनें-भाभियाँ तैयारी कर रही थीं और थोड़ा शुरु ही किया था कि इन्द्रदेव मानो प्रगट की निष्ठा वाले इन मुक्तों का दर्शन करने पधारे और बरसात शुरु हो गई।

नौ बजे के करीब सौ. कां. प्राची एवं श्री विश्वासजी की मुबंई वापसी की फ्लाईट थी। सो, एक अनोखा आनंद-एक दिव्य परिवार का अपनापन महसूस करके-इन सभी स्मृतियों को संजो कर वे सायं सात बजे एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए...

हमेशा की तरह हरिभक्तों का मन तो अपने प्यारे गुरुजी को छोड़ कर जाने का नहीं हो रहा था, पर दूसरे दिन फिर 'बड़े घर - दीवाली' शिविर में आने की उमंग में सभी ने विदाई ली।

3 नवंबर–'भैयादूज' के मंगलकारी दिन दोपहर को प.पू. गुरुजी एवं सत्तर-अस्सी मुक्त प.भ. विजयपालजी के घर दीवाली की पधरामनी निमित्त प्रसाद लेने गए। शाम को फिर शिविर का सत्र शुरु हुआ। यूं **6 नवंबर लाभपंचमी** तक रोज शाम को प.पू. गुरुजी की परावाणी का लाभ सभी मुक्तों को निरंतर मिलता रहा और... 7 नवंबर को गुजरात एवं मुंबई मंडल अपने घर लौटने रवाना हुए !

दस दिन की इस शिविर में परम पूज्य गुरुजी ने *'भक्त चरितम्'* एवं *'हरिचरण की सुरसरिताएँ'* पुस्तक में से प.भ. कौशिकभाई द्वारा श्रीजी महाराज के समय के भक्तों के प्रेरणादायी प्रसंग पढ़वाए और निरूपण करके सभी को ऐसा जीवन जीने प्रेरणा दी। फलस्वरूप अब समय गंवाए बिना हम अपने जीवन में हुई भव्य प्राप्ति को समझ कर, अपने सबसे अधिक प्यारे माने हुए मन को ठुकरा कर-स्वभाव रहित होकर अंतिम जन्म कर लेने का सभी को एहसास हुआ और... 'जगे तब से सुबह' समझ कर कई मुक्तों ने नए सिरे से संत से दृढ़ संबंध कर लेने संकल्प कर लिया !

'बड़े घर-दीवाली' शिविर में लाभ लेने **प.भ. मल्कानी अंकल** रोज डेढ़ घंटे की ड्राईव करके मंदिर आते थे। सो, सत्संग के प्रति उनकी ऐसी गरज और परिश्रम की सराहना के रूप में अन्नकूट की आरती संपन्न करके प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की मूर्ति का प्रसादीभूत हार उन्हें पहना कर अपनी प्रसन्नता दर्शायी।

शिविर में पू. मल्कानी अंकल ने भी अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि–

अमदावाद के मुक्त एक ट्रेडिशन तोड़ कर दीवाली के दिनों में घर बंद करके जो आए हैं, उनकी भावना मुझे अत्यधिक स्पर्श कर गई है ! जगत की सारी रुढ़ि- रिवाजों को तोड़ कर यूं संत – समागम के लिए आना खूब कठिन है। सो उन्हें खूब-खूब अभिनंदन है- कोन्ग्रेच्युलेशन्स हैं।

इससे भी अधिक, छोटे बच्चों को भी ढाई घंटे की सभा में बैठे देख कर वे साश्चर्य खूब खुश भी हुए कि –

एकदम ठीक समय पर – जब बच्चों को एक सही मार्गदर्शन की जरुरत होती है – उम्र के उस पड़ाव में ही उन्हें प.पू. गुरुजी का संबंध हो गया...

- *शिविर दौरान प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई सूझ 'भगवत् कृपा' के आगामी अंकों में 'श्रवण, मनन, निदिध्यासन' शीर्षक के अंतर्गत क्रमशः देते रहेंगे।*

✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद...

'जब कोई नहीं आता ठाकुरजी आते हैं' – दीवाली कार्ड में लिखी यह पंक्ति कहती है कि जब मुसीबत से उबरने की कोई गुंजाइश नहीं होती, तब भजन करने पर भगवान तो हमारा काम जरुर करते हैं। हमने भी यह बात कई ऐसे प्रसंगों में आजमाई हुई है कि कुछ भी हुआ हो – अंधेरा नज़र आता हो, भजन करें तो कोई ना कोई हल निकल आता है। लेकिन कहते हैं ना – **'फरगेटफुलनेस'** ! हम ये बातें भूल जाते हैं। कुछ स्वार्थी ही हैं हम लोग। बस, काम हो गया– गुजराती में जिसे कहते हैं कि **'गरज पती ने वैद्य वेरी'**। पर, संतों का उपदेश हमें जीने के लिए होता है।

...मैं हमेशा कहता हूँ कि शॅक्सपियर को तो प्रभु नहीं मिले थे, तब भी अगर वो लिख सकता है कि– 'लॅट बाय गोन्स बी बाय गोन्स' - 'जो हो गया उसे भूल जाओ।' और... हमें तो प्रभु 'प्रगट' मिले हैं। तो अब ये नए साल से हम अगर हमारी गल्ती का एहसास करके बरतना शुरु करेंगे, तो ये ना सोचें कि हमारा इतना टाईम तो बिगड़ गया। **शुरु से हमें जो मिलना था, वो इसी पल से मिल जाएगा**; जैसे कि कोई इन्क्रिमेन्ट ऐसा होता है कि पहले जो मिलना था, वो साथ में एडजस्ट होकर आता है – जिसको कहते हैं–रेट्रोस्पेक्टिव इन्क्रिमेन्ट।

हर एक को यह पता है कि धुन करते हैं, तो आख़िर काम हो तो जाता है। सो, ये कार्ड में कहने का **मक़सद सिर्फ इतना है** कि ऐसी बात है तो फिर **हम रेग्युलर्ली धुन क्यों ना करें, ताकि कोई टेन्शन रहे ही नहीं** !

मैं अभी विश्वासजी के साथ बात करता था कि **हमारी सारी फिलॉसॉफी लिविंग है।** जैसे **अर्जुन का सारथी मानवस्वरूप में कृष्णरूप में मौजूद था, तो उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया। भगवान स्वामिनारायण ने यह करुणा बरसा दी कि ऐसे पवित्र संतों द्वारा पारमेश्वरी चेतना मानवस्वरूप में जीती-जागती, बोलती-फिरती हमारे साथ रख दी। बस – उसका सिमरन, उसका वचन, उसकी आज्ञा, उसको आगे रख कर हम अपने ईष्टदेव का मंत्रजाप करेंगे, वो इन्स्टन्ट हमारी प्रार्थना सुनेंगे।**

आज से तीस-पैंतीस साल पहले 'पोलसन' की कॉफी को उबालो, फिल्टर करो-बनाने में कितना समय लगता था ? और अब 'नेस्कैफ' कैसी फट् बन जाती है ! ऐसी कई एड्वान्स्मेन्ट सायन्स की टेक्नोलॉजी में हुई है। इसी तरह **भगवान स्वामिनारायण ने अक्षरब्रह्म को मानवस्वरूप में अपने साथ पृथ्वी पर लाकर स्पीरीच्युअल टेक्नोलॉजी में यह एक एड्वांस्मेन्ट करी है।** ये बात हमारे भेजे में उतर जानी चाहिए। पर, पूर्व के पाश पड़े होते हैं, वो ये मानने नहीं देते कि अहो !

'बड़े घर – दीवाली' शिविर

वार्षिक स्नेहमिलन सभा

ग्वाल, बाल, लाल जमे मदन

ग्वाल, बाल, लाल जमे मदन

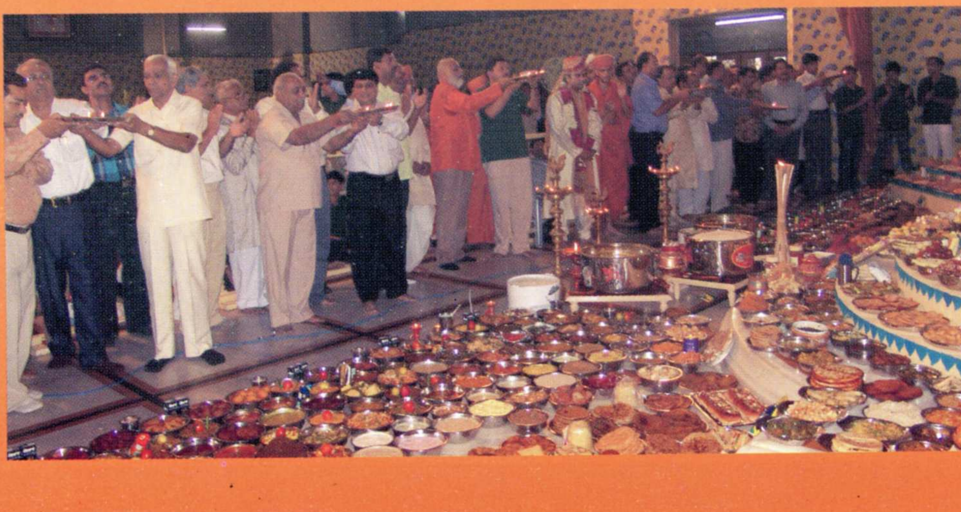

त गोपाल.... अन्नकूट आरती !

गोपाल.... अन्नकूट आरती !

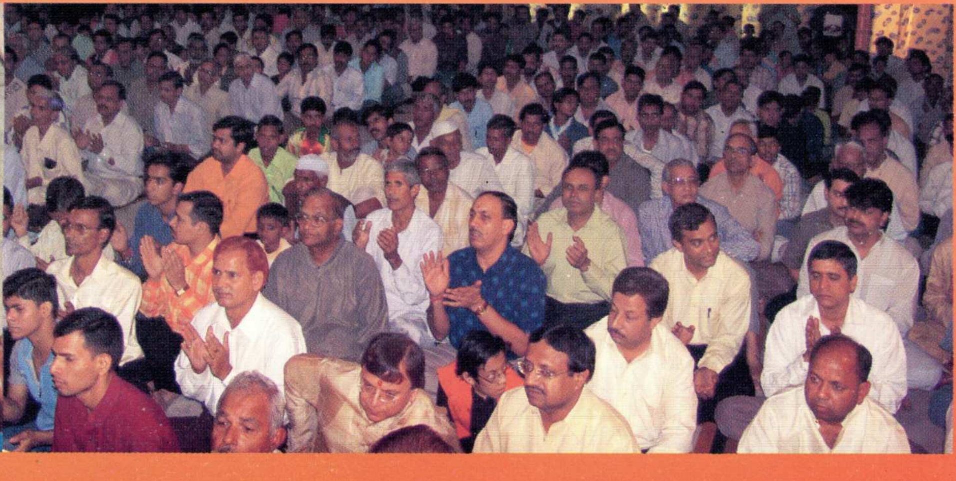

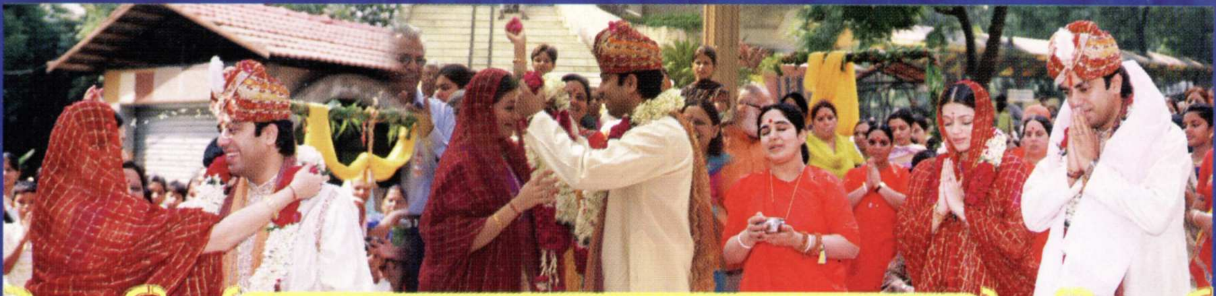

प.पू. दीदी की निश्रा व सभी मुक्तों की हाज़िरी में 'मंगलफेरे' के रूप में प्रदक्षिणा के पश्चात् मानो – नवविवाहित श्री विश्वासजी एवं सौ. प्राची !

मानवस्वरूप में प्रभु !! प्रभु कोई हुआ नहीं, हो नहीं सकता; लेकिन प्रभु अखंड रखे हुए संतों की एक परंपरा भगवान स्वामिनारायण ने अक्षरब्रह्म द्वारा मौजूद रखी है।

ऐसे संत में हमेशा सांगोपांग प्रभु विराजमान रहते हैं। उसमें से प्रभु बोलते हैं, प्रभु खाते हैं, प्रभु देखते हैं।

ये एक कन्विक्शन हम पक्की कर लें।

यही बात मैंने कार्ड में लिखी है कि हमें ठाकुरजी 'प्रगट' मिले हैं।

सूर्य प्रगट है तो उजाला है, सूर्य प्रगट है तो तेज है, सूर्य प्रगट है तो गर्मी लगती है।

इस तरह हमारे प्रभु मानवस्वरूप में प्रगट होने चाहिए।

...जिस तरह राधा और कृष्ण, सीता और राम, शिव और शक्ति की **'युगल उपासना'** है, इसी तरह ब्रह्म-परब्रह्म, अक्षर-पुरुषोत्तम, स्वामी-नारायण की 'युगल उपासना' के लिए **ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज** वड़ताल की संस्था से बाहर निकले – उसे एक शताब्दी होने आई। सुखी होने के लिए महाराज ने जो ज्ञान दिया, उसे कॉमन मास में परोस देने के लिए–ढालने के लिए शास्त्रीजी महाराज संस्था से अलग हुए। ब्रह्मस्वरूप हुए संत में परब्रह्म तत्त्व अखंड विराजमान रहता है। उनकी शरण में हम चले जाएं, उसके साथ कोई भी प्रकार से अनन्य संबंध – जैसे राधा और कृष्ण का मधुरभाव का संबंध था, जशोदा का क्हाना से वात्सल्यभाव का संबंध था, अर्जुन और कृष्ण का सखाभाव का संबंध था, हनुमान का श्री राम से दासत्व का संबंध था – ऐसा एक पक्का संबंध - अनन्यभाव का – 'मेरे तो इक गिरधर गोपाल, दुजो ना कोई...' यूं पक्का करके कोई जीवन जिए तो दिया या टार्च लेकर भी दुःख ढूंढने निकले तो उसे मिलेगा नहीं। 'अनन्यभाव' ऐसा कि– दूसरे सब आदरणीय जरुर हैं, लेकिन सेवनीय स्वरूप एक ही हो सकता है।

...आज के दिन-नए साल के दिन जो हमारी भावना रहती है कि हम मंदिर जाएं-आशीर्वाद लें, ऐसी भावना हमेशा बनी रहनी चाहिए। यह बात काकाजी अलग ढंग से कहते थे कि प्रगट के उपासकों को तो रोज दीवाली, रोज नया वर्ष !

...निश्चिंतता कैसी ? क्या होगा – मेरा यह साल कैसा जाएगा – कब होगा – होगा कि नहीं होगा – यह चिंता हम ना करें। मेरा जो भी करेंगे, प्रभु करेंगे और वे मेरे अहित में कभी होने ही नहीं देंगे – हित में ही करेंगे। यह कन्विक्शन पक्की हो जाए और हम चिंता में डूब ना जाएं, एक्साईट भी ना हो जाएं – वो **'निष्ठा'** बोली जाती है।

काकाजी हमेशा कहते थे कि हर काम में पहले भगवान के नाम का नमक डालो और हमने काकाजी के जीवन में भी देखा है कि कोई भी छोटा-मोटा काम हो, तो वे हमेशा पहले कहते– 'चलो, दो मिनिट धुन कर लें'।

यह बहुत जरुरी बात है। हम यह करते नहीं है, फिर भगवान को दोष देते हैं कि क्या करा हमारा ?

मैंने पहले भी बताया है कि किसी ने पूछा कि –

श्री कृष्ण के साथ पांडवों का इतना संबंध था, फिर भी उन्होंने क्यों दुःख भोगे ?

अगर कृष्ण इनके साथ थे तो वे हार कैसे गए ?

कृष्ण के संबंध का फायदा क्या ?

कोई कहे मोक्ष हो जाएगा-कल्याण हो जाएगा। अरे ! सारी जिंदगी तो हायतौबा में गई – फिर अर्थ क्या ?

पर, हम सोचें कि – पांडवों का कृष्ण के साथ संबंध जरुर था, लेकिन वे जुआ खेलने बैठे तब किसी एक ने भी कहा कि चलो 'कृष्ण' को याद करके फिर खेलते हैं ?

मैंने अभी विश्वासजी को यही कहा है। वो बिज़नेस के बारे पूछते थे कि मैं यह करुँ या नहीं करुँ ? मैंने कहा कि जो भी बिज़नेस करना हो, प्रभु को याद करके फिर उस बारे सोचो। प.पू. काकाजी कहते – धॅन वी कमीट नो मीस्टेक। सारी जिम्मेदारी फिर प्रभु की बनती है। अगर हमारे फेवर में नहीं होगा, तो – हमारी फिलोसोफी तो लिविंग है – इमीजियेट्ली

स्पीड ब्रेकर्स कह दो, बॅरियर्स कह दो, रेड सिग्नल्स कह दो-आ जाएंगे। काम करने ही नहीं देंगे और यदि हमारी फेवर में होगा तो सारी ग्रीन लाईट्स मिल जाएगी। समझ लेना कि हमारा रास्ता साफ है—अपने आप निकल रहा है।

...पर, हम एक प्रोग्राम ही बना लें कि सुबह उठ कर रोज दस-पन्द्रह मिनिट एक चित्त से धुन-भजन कर लें और रात को भी दस-पंद्रह मिनिट ऐसा भजन कर लें। हम कहते हैं कि हमें प्रभु से प्यार है। अगर प्रभु को दिन में हम पंद्रह मिनिट भी यूं याद नहीं कर सकते तो क्या प्यार है ? **नए साल पर हम यह पक्का करके ही जाएं कि— जो हो गया, हो गया—अब इस साल से हर एक क्रिया संत की स्मृति के साथ जाप करके करेंगे।** स्मृति का मतलब रिमेम्बरन्स तो है ही ! रिमेम्बरन्स की आदत डालते - डालते फिर वो कॉन्सियसनेस बन जाएगी।

मैं तो कहता हूँ कि कुछ 'स्वीट' भी खानी है—'प्रभु स्वीट खाओ'—यूं करके खाओ। हमारे लिए नुकसानदायी होगी, तो कोई बच्चा आ जाएगा और ले जाएगा !' अजमा कर तो देखें, हम अजमाते नहीं हैं। पप्पाजी इसे कहते हैं – 'पहेला प्रभु, पछी पगलुं— यानि पहले प्रभु, फिर कदम उठाना'। काकाजी के बोलने का ढंग अलग था, उनकी लेंग्वेज अलग होती थी। पर, दोनों में फर्क कोई नहीं था। एक बार पप्पाजी स्वयं बोले थे कि— **पप्पा ने काका एटले एक हथेली — एक पाछळनो भाग—काळो अने एक आ बाजुनो भाग गोरो , यानि— 'उजला'।**

...मुसीबत आती है, तब भी हम तो दूसरे आधार ढूंढते रहते हैं। हमारी एक टेन्डन्सी है कि शॉर्ट कट से काम हो जाए, पर वो गलत रहता है। **हमें जब ऐसा संबंध हुआ है, तो हर काम प्रभु से ही क्यों ना होने दें ? लॅट हीम वर्क। हम से ज्यादा ही नोझ वॅल, वॉट इझ बेटर फॉर अस।** और... वो हमारे लिए पर्मनन्टली अच्छा ही बना रहेगा। पर, हम दूसरे आधार ढूंढने लगते हैं। आख़िर मेन्टल मेन्यूप्लेशन्स करते हैं कि हम ऐसा-ऐसा-ऐसा करें तो अच्छा है। पर, **प्रभु की बहुत कृपा होती है कि हमारा खड़ा करा सारा ढांचा वो तोड़ देते हैं।** इशारा देते हैं कि इस रास्ते हमें नहीं जाना है। **जब भी कोई प्रॉब्लेम आए, तो हम सिर्फ 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन तीव्रता से करें।** विश्वासजी को भी मैं कहूँगा कि अब यहाँ आए हो, हमारा एक संबंध हुआ है, तो यहाँ से ये पक्का करके जाओ कि **कोई भी काम करना हो, पहले प्रभु को-हमें मिले प्रभु को पलभर याद करके कदम उठाना। हमारे प्रभु हमारे साथ मानवस्वरूप में मौजूद होने चाहिए—यह इनएविटेबल फॅक्टर है।** अभी—आजकल यह कम्पयूटर ना हो तो हमारे काम जीओपेरेडाईझ हो जाएं। यूं , **सहज, सुखी और ईन्स्यॉर्ड जीवन के लिए ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत से संबंध अनिवार्य है।**

...यूं मुसीबत में हम दूसरे उपाय पहले लेते हैं, पर जब लगे कि कोई तरीके से अपनी चलती नहीं है, तब फिर प्रभु को याद करते हैं। **प्रभु के नाम का-भजन का शस्त्र अचूक शस्त्र—अमोघ शस्त्र है। वह कभी फेईल नहीं जाएगा।** और **उससे निकला हल भी ऐसा होगा कि जो-जो इसमें कन्सर्न्ड होंगे, हर एक की फेवर में काम होगा।** अजीब बात है ना ये ? हम अपने आप मेन्यूप्लेट करेंगे, वहाँ किसी को लॉस, तो किसी को फायदा; किसी को दुःख, तो किसी को सुख ! **प्रभु ने जो सेटिंग कर दिया होगा वहाँ ऐवरीबडी विल एन्जॉय ! 'प्रभु'—सर्वजीवहितकारी जो ठहरे !**

मैं तकरीबन हर सभा में कहता हूँ कि हम सिर्फ बोलते हैं कि प्रभु ! आप सर्वेसर्वा हो। पर, प्रभु को हम स्टिपनी-स्पॅर व्हील के सिवा कुछ नहीं समझते। जब ऐसा लगे कि गाड़ी पंक्चर हो गई है, तब याद करेंगे कि स्टिपनी ली है ना ? रास्ते में कभी नहीं याद करेंगे। इस तरह जब 'अपनी गाड़ी' एकदम खटक जाती है, तब हम प्रभु को याद करते हैं...

तो, आज तक जो हमने ये गल्ती खाई कि— कभी भूल गए-करे, उसकी बजाय नए साल से हम रॅग्युलर हमारा भजन करें। हमेशा इनकी कॉन्सियसनेस में रह कर ही काम करें। बस यही एक संदेशा—दीवाली व नए वर्ष का पढ़ना था... शुभं भवतु-मंगलं भवतु।

– प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन

***अन्नकूट-2 नवंबर, बुधवार** (ध्वनिमुद्रण द्वारा संकलित)*

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

- ❋ साधु के साथ कपट नहीं रखना चाहिए। उसके पास हमेशा पारदर्शक रहना... यूं खुल्ला संबंध रख कर साधु से जुड़ जाना।
- ❋ गुरुहरि योगीजी महाराज ने **'शुद्धभाव'** से सत्पुरुष का सेवन करने में 'शुद्धभाव' का अर्थ बताया था कि दिल की सच्चाई से यह मानना है कि **प्रत्यक्ष स्वरूप के रूप में हमें साक्षात् मिली हुई मूर्ति से कोई अलग मूर्ति अक्षरधाम में नहीं है—इसे कहा जाए 'शुद्धभाव'।**

  परम पूज्य काकाजी को जो हमने देखे, वही मूर्ति अक्षरधाम में है। पर, हमारे भीतर में छुपी-छुपी यह भावना बनी रहती है कि हमें तो पाघ धारण करे हुए महाराज के दर्शन हों !
- ❋ हम लोगों की सोच गलत नहीं है, पर कॉमन मास की है। **पोस्ट ग्रेज्युएट स्टुडन्ट्स की तरह वी बिलोंग टु ए हायर स्टडी ग्रुप।** हमारी सोच ऊँची होनी चाहिए। इसे मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा— **'अंतःकरण से परे की सोच'** !

  कोई व्यक्ति रॉयल फेमिली को बिलोंग करता हो, तो उसकी सोच, रहन-सहन, उठने-बैठने, चलने, खाने-पीने से पता चलता है ना कि वह किसी रॉयल फेमिली से है।
- ❋ एक बार परम पूज्य काकाजी ने मुझे समझाया था कि **अपना स्फियर बिलकुल अलग व ऊँचा है।** वातावरण के अंदर न्यूटन का लॉ काम में आएगा, पर अवकाश में वो कुछ काम में नहीं आएगा। चाहे कितना ही परफॅक्ट कॅल्क्यूलेशन्स क्यों ना हो, परंतु वो लॉ काम में नहीं आएगा... वहाँ अवकाश में तो आईन्सटाईन का प्रींसीपल ही काम आएगा। **इसी तरह हमें 'मानवस्वरूप में प्रभु' मिलने के बाद हमने अपने मन से करा तप, व्रत, साधन आदि कोई मायने नहीं लगता।**
- ❋ हमें शास्त्रों के शब्दों की भ्रांति रहती है कि मोक्ष पाने के लिए इतने-इतने साधन—तपस्या, व्रत, यज्ञ, तीर्थयात्रा वगैरह तो करने ही पड़ें। परन्तु, **प्रगट की सारी आल्फाबॅट अलग है।**
- ❋ हमें अगर किसी भी रूप में 'साधन' का प्रभाव पड़ जाता है कि फलां व्यक्ति तो एक टांग पर इतने सालों से खड़ा है, फलां व्यक्ति तो कुछ खाता ही नहीं, फलां व्यक्ति तो सदा सत्य ही बोलता है वगैरह; तो इसका अर्थ यही कि हमें अभी तक **गुण के स्थितप्रज्ञ** का ही प्रभाव है। स्वरूप के स्थितप्रज्ञ का नहीं है।
- ❋ प्रश्न उठता है कि **स्वरूप का स्थितप्रज्ञ** किसे कहा जाए ? भगवान अखंड रखे हुए साधु—परम पूज्य काकाजी, परम पूज्य पप्पाजी, परम पूज्य स्वामिजी जैसे स्वरूप के प्रति त्रिकाल में भी कभी संशय ना उठे कि स्वरूप ने ऐसा क्यों किया होगा—वो हम स्वरूप के स्थितप्रज्ञ कहे जाएं।
- ❋ गुण की स्थितप्रज्ञता कायम नहीं रहती, जबकि स्वरूप की स्थितप्रज्ञता शाश्वत् है। अर्जुन को भगवान श्री कृष्ण में-स्वरूप में स्थितप्रज्ञता थी, तो वह आख़िरकार नारायणस्वरूप बना। **ऐसी दृढ़ मति वाले को भगवान सब पापों से छुड़ा देते हैं।**
- ❋ वचनामृत गढडा मध्य १७ में श्रीजी महाराज ने बताया है कि जिसे भगवान के स्वरूप में किसी भी प्रकार का संशय नहीं हो, उसे **निर्विकल्प स्थिति** वाला जानना। उसे हमेशा दृढ़ मति रहती है कि जो मिले हैं वे दिव्य हैं। उसे स्थितप्रज्ञ कहा जाए।

  हमें तो बार-बार संशय हो जाता है कि स्वरूप ने ऐसा क्यों किया ? यदि वे भगवान का स्वरूप हो तो उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। श्री कृष्ण झूठ क्यों बोले थे... ऐसा विचार स्वरूप के स्थितप्रज्ञ को कभी भी नहीं आएगा।
- ❋ गीता के एक श्लोक में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कहा है कि **'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज'**। इसका अर्थ यह नहीं समझना कि हम अपने कुल धर्म को छोड़ दें। बल्कि इसका गहरा अर्थ यह है कि हम अपने मन के माने हुए सभी **सत्यों** को छोड़ कर यानि—यह करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए ऐसी अपनी सोच को छोड़ कर **परम सत्यस्वरूप** विभूति जो कहे वह करें। युद्ध करने को कहे तो उस समय वह करना—वही सच्चा धर्म कहा जाए !

* परम पूज्य काकाजी, परम पूज्य पप्पाजी, परम पूज्य स्वामिजी जैसे गुणातीत पुरुष जो भी बोलते हैं, उस बात में जरुर कुछ मर्म छिपा हुआ होता है।
* परम पूज्य काकाजी व परम पूज्य पप्पाजी ने हमारे लिए साधना के क्रक्स के ऐसे-ऐसे हल निकाल कर दिए कि हमें उससे ऊपर कुछ सोचने की जरुरत ही ना पड़े।
* अपनी समस्या का हल निकालने कई बार भगवान व संत जो कहें वह हम करते जरुर हैं, पर साथ ही कोई 'स्टेन्ड बाई' एरेन्जमेंट भी रखते हैं। क्योंकि बीच में अपना माईन्ड आ जाता है कि कहीं महाराज ने अपना काम नहीं किया तो ?

  दूसरी ओर महाराज को स्टेन्ड बाई एरेन्जमेंट बर्दाश्त ही नहीं है। इसलिए **परम पूज्य काकाजी एक शब्द बोलते थे – 'टोटल'!**
* हम दिल की सच्चाई से यह नहीं मानते कि हमें मिले प्रगट स्वरूप के द्वारा ही मेरा मोक्ष होने वाला है। अगर यह मान लिया हो, तो हमारे सभी काम हो जाएंगे। हम परमपद को जरुर पा लेंगे।
* शुकदेवजी ने श्री कृष्ण भगवान की रासलीला में संशय नहीं किया, बल्कि उस लीला को सराहा ! उसे दिव्य मान कर महिमा गाई।

  गोपियों के साथ तो भगवान ने रासलीला की थी, तब भी गोपियों को श्री कृष्ण भगवान में लेशमात्र भी संशय नहीं हुआ कि भगवान ने हमारे साथ ऐसी चेष्टा क्यों करी ?

  तो दूसरी ओर राजा परीक्षित को वो रासलीला सिर्फ सुन कर ही संशय हुआ !
* उद्धवजी को भी श्री कृष्ण के मानवचरित्रों में संशय नहीं हुआ और भगवान कृष्ण के वचन से गोपियों के पास गए, तो गोपियों का-अरे ! उनके संबंध वालों का भी उद्धवजी ने गुण ही लिया और उनकी अत्यधिक महिमा समझी।
* **भगवान का दृढ़ भक्त ही दूसरे भक्तों की महिमा समझ पाएगा।** जैसे उद्धवजी ने गोपियों के साथ बराबरी नहीं करी, बल्कि उनकी महिमा समझी।

  हम 'दृढ़ भक्त' हैं या नहीं ? इस प्रश्न का यह बॅरोमीटर है।
* हमें भगवान व संत का आसरा तो है, पर वह अचल नहीं है। बार-बार हिल जाता है।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	27.11.2005,	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(2)	दि.	11.12.2005,	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(3)	दि.	16.12.2005,	शुक्रवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(4)	दि.	27.12.2005,	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत
(5)	दि.	10.1.2006,	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत
(6)	दि.	14.1.2006,	शनिवार	–	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine

Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor :—

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,

Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327

Printed at : **Delux Offset Printers**

308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

TO,